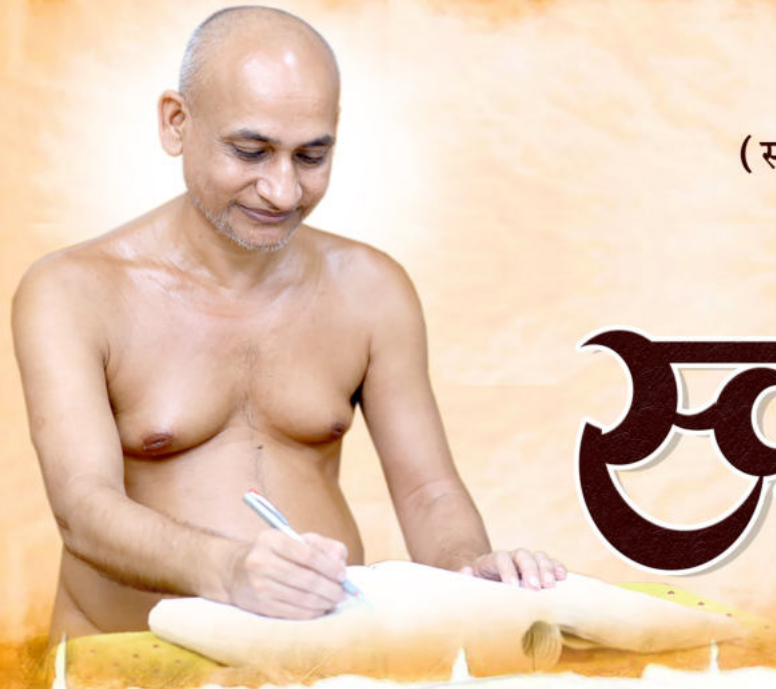

अनादि अनिधन

जिनागम पंथ जयवंत हो

(स्वर्णिम विमर्शोत्सव एवं रजत संयमोत्सव वर्ष 2022-24 के अवसर पर)

भावलिंगी संत आचार्य विमर्शसागर विरचित

स्वरूप स्तुति

हूँ आत्मा उपयोगमय, ज्ञायक स्वभाव मेरा अहा।
निर्द्वन्द्व हूँ निर्बन्ध हूँ, आनन्दकन्द सहज अहा।।
नित शान्तरसमय जानकर, निज शान्तरस नित पानकर।
निज शांतरस में लीन हूँ, ध्रुवरूप निज अनुभव अहा ॥1॥

मेरे असंखप्रदेश में, भगवान् आतम बस रहा।
मैं हूँ स्वयं परमात्मा, परमात्मरूप विलस रहा।।
हूँ सिद्धकुल का अंश मैं, बतला रही भवितव्यता।
मैं सिद्ध शक्ति अंश से, निजद्रव्य की निज द्रव्यता ॥2॥

रागादि भाव विकार का, निजद्रव्य में दर्शन नहीं।
परद्रव्य या परभाव का, चित् रूप स्पर्शन नहीं।।
सबसे पृथक् सबसे विलग, अविकार रूप मेरा अहा।
मैं पूर्ण सहज स्वभाव से, जो वीतरागमयी कहा ॥3॥

हूँ द्रव्य-गुण से ध्रुव अहा, नित परिणमन को प्राप्त हूँ।
परिणमन निश्चय आप्तमय, शक्ति से निश्चय आप्त हूँ ।।
कारण स्वयं हूँ कार्य भी, शिवमार्ग स्वयं हूँ मार्गफल ।
मैं भावलिंगी संत हूँ, ज्ञायक हूँ मैं, जीवन सफल ॥4॥

नमनकर्ता: जिनागम पंथी श्रावक संघ, दिल्ली